सुन्नत क्या है? (भाग 2 का 2): इस्लामी कानून में सुन्नत

रेटिंग:

विवरण:

श्रेणी: लेख पैगंबर मुहम्मद उनकी पैगंबरी के सबूत

श्रेणी: लेख सबूत इस्लाम सत्य है मुहम्मद की पैगंबरी के सबूत

द्वारा: The Editorial Team of Dr. Abdurrahman al-Muala (translated by islamtoday.com)

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

सुन्नत और क़ुरआन के बीच का अंतर

क़ुरआन इस्लामी कानून की नींव है। यह ईश्वर का चमत्कारी भाषण है जो दूत के लिए प्रकट हुआ था (ईश्वर की दया और आशीर्वाद उन पर हो), स्वर्गदूत जिब्राइल के माध्यम से। इस अधिकार की इतनी सारी श्रृंखलाओं के साथ हमें प्रेषित किया गया है कि इसकी ऐतिहासिक प्रामाणिकता निर्विवाद है। यह क़ुरआन वैसे ही लिखा गया जैसे अवतरित हुआ है और इसका पढ़ाई भी पुण्य कर्म है।

जहाँ तक सुन्नत का सवाल है, यह क़ुरआन के अलावा सब कुछ है जो ईश्वर के दूत से आया है। यह क़ुरआन के नियम कानूनों के बारे में बताता है और विवरण प्रदान करता है। यह इन कानूनों के व्यावहारिक अनुप्रयोग के उदाहरण भी प्रदान करता है। यह या तो ईश्वर की ओर से प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन है, या दूत के निर्णय जो तब रहस्योद्घाटन द्वारा पुष्टि की गई थी। इसलिए, सभी सुन्नत का स्रोत रहस्योद्घाटन ही है।

क़ुरआन एक रहस्योद्घाटन है जिसे औपचारिक रूप से पूजा के कार्य के रूप में पढ़ा या पारायण किया जाता है, और सुन्नत रहस्योद्घाटन है जिसे औपचारिक रूप से नहीं पढ़ा जाता है। हालाँकि, सुन्नत क़ुरआन की तरह एक रहस्योद्घाटन है जिसका अनुसरण और अनुपालन किया जाना चाहिए।

क़ुरआन सुन्नत पर दो तरह से प्रधानता लेता है। कहे तो, क़ुरआन में ईश्वर के सटीक शब्द, प्रकृति में चमत्कारी, अंतिम छंद तक शामिल हैं। हालाँकि, सुन्नत आवश्यक रूप से ईश्वर के सटीक शब्द नहीं हैं,

बल्कि उनके अर्थ हैं जैसा कि पैगंबर द्वारा समझाया गया है।

इस्लामी कानून में सुन्नत की स्थिति

रसूल (दूत) के जीवनकाल में क़ुरआन और सुन्नत ही इस्लामी कानून के एकमात्र स्रोत था।

क़ुरआन सामान्य सिद्धांतों के साथ स्थापित करते हुए कुछ आदेशों के अपवाद के साथ सभी विवरणों और माध्यमिक कानूनों के (व्याख्या किए) बिना, कानून का आधार बनने वाले सामान्य आदेश प्रदान करता है। ये आदेश समय के साथ या लोगों की बदलती परिस्थितियों के साथ परिवर्तन के अधीन नहीं हैं। क़ुरआन, इसी तरह, विश्वास के सिद्धांतों के साथ आता है, पूजा के कृत्यों को निर्धारित करता है, पुराने राष्ट्रों की कहानियों का उल्लेख करता है, और नैतिक दिशानिर्देश प्रदान करता है।

सुन्नत क़ुरआन के साथ समझौते में आती है। यह पाठ में जो अस्पष्ट है उसका अर्थ समझाता है, सामान्य शब्दों में जो दर्शाया गया है उसका विवरण प्रदान करता है, जो सामान्य है उसे निर्दिष्ट करता है, और इसके निषेधाज्ञा और उद्देश्यों की व्याख्या करता है। सुन्नत भी आदेश के साथ आता है जो क़ुरआन द्वारा प्रदान नहीं किया जाता है, लेकिन ये हमेशा इसके सिद्धांतों के अनुरूप होते हैं, और वे हमेशा क़ुरआन में उल्लिखित उद्देश्यों को आगे बढ़ाते हैं।

सुन्नत क़ुरआन में क्या है की एक व्यावहारिक अभिव्यक्ति है। उसकी अभिव्यक्ति कई रूप बताती है। कभी-कभी, यह मैसेंजर (दूत) द्वारा की गई कार्रवाई के रूप में आता है। अन्य समय में, यह एक बयान है जो उन्होंने किसी चीज के जवाब में दिया था। कभी-कभी, यह किसी एक साथी के बयान या कार्रवाई का रूप ले लेता है जिसे उसने न तो रोका और न ही आपत्ति की। इसके विपरीत, वह इस पर चुप रहे या इसके लिए अपनी स्वीकृति व्यक्त की।

सुन्नत क़ुरआन को कई तरह से समझाती और स्पष्ट करती है। यह बताता है कि पूजा के कार्य और क़ुरआन में वर्णित कानूनों का पालन कैसे करें। ईश्वर विश्वासियों को आज्ञा देता है कि वे प्रार्थना करें (समय या उन्हें करने के तरीके का उल्लेख किए बिना)। रसूल ने इसे अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से और मुसलमानों को प्रार्थना करना सिखाकर स्पष्ट किया। उन्होंने कहा: "वैसे प्रार्थना करो जैसे तुमने मुझे प्रार्थना करते देखा है।"

ईश्वर हज यात्रा को उसके रस्में बताए बिना अनिवार्य कर देता है। ईश्वर के दूत यह कहकर इसकी व्याख्या करते हैं:

"मुझ से हज की रस्में सिख लो।"

ईश्वर ज़कात कर (चुंगी) को अनिवार्य बनाता है बिना यह बताए कि किसि प्रकार के धन और उत्पादन के खिलाफ लगाया जाना है। ईश्वर उस न्यूनतम राशि का भी उल्लेख नहीं करते हैं जो कर (चुंगी) को अनिवार्य बनाता है। हालाँकि, सुन्नत यह सब स्पष्ट करती है।

सुन्नत क़ुरआन में पाए जाने वाले सामान्य बयानों को निर्दिष्ट करता है। ईश्वर कहते हैं:

"ईश्वर आपको अपने बच्चों के बारे में आदेश देते हैं: मर्द के लिए, दो महिलाओं के बराबर एक हिस्सा ..." (कुरआन 4:11)

यह शब्द सामान्य है, प्रत्येक परिवार पर लागू होता है और प्रत्येक बच्चे को उसके माता-पिता का उत्तराधिकारी बनाता है। सुन्नत पैगंबर के बच्चों को छोड़कर इस फैसले को और अधिक विशिष्ट बनाता है। ईश्वर के दूत ने कहा:

“हम नबी अपने पीछे कोई विरासत नहीं छोड़ते। हम जो कुछ भी पीछे छोड़ते है वह दान है। ”

सुन्नत कुरआन के अयोग्य बयानों को योग्य बनाता है। ईश्वर कहते हैं:

“...और पानी न मिले, तो साफ मिट्टी से तयम्मुम करो और उसे अपने चेहरे और हांथो पर मलें... (कुरआन 5:6)

छंद में हाथ की सीमा का उल्लेख नहीं है, इस प्रश्न को छोड़कर कि क्या हाथों को कलाई या अग्रभाग तक मलना चाहिए। सुन्नत यह दिखाते हुए स्पष्ट करती है कि यह कलाई पर है, क्योंकि यह वही है जो ईश्वर के दूत ने किया था जब उन्होंने शुष्क स्नान (वुज़ू) किया था।

सुन्नत इस बात पर भी जोर देती है कि क़ुरआन में क्या है या उसमें बताए गए कानून के लिए माध्यमिक कानून प्रदान करता है। इसमें सभी हदीस शामिल हैं जो इंगित करते हैं कि प्रार्थना, ज़कात कर, उपवास और हज यात्रा अनिवार्य हैं।

क़ुरआन में पाए जाने वाले निषेधाज्ञा के लिए सुन्नत सहायक कानून प्रदान करता है, इसका एक उदाहरण सुन्नत में पाया गया है कि फल पकने से पहले उसे बेचना मना है। इस कानून का आधार क़ुरआन का कथन है:

आपस में अपनी संपत्ति का अनुचित उपभोग न करें, सिवाय इसके कि यह आपस में आपसी सहमति से व्यापार हो।

सुन्नत में ऐसे नियम शामिल हैं जिनका क़ुरआन में उल्लेख नहीं है और जो क़ुरआन में वर्णित किसी चीज के लिए स्पष्टीकरण के रूप में नहीं होते हैं। इसका एक उदाहरण गधे का मांस और शिकारी जानवरों का मांस खाने का निषेध है। इसका एक और उदाहरण एक महिला और उसकी मौसी से एक ही समय में शादी करने का निषेध है। सुन्नत द्वारा प्रदान किए गए इन और अन्य नियमों का पालन किया जाना चाहिए।

सुन्नत का पालन करने का दायित्व

पैगंबरी में विश्वास करने के लिए आवश्यकता यह है कि जो कुछ भी ईश्वर के दूत ने कहा है, उसे सच मान लें। ईश्वर ने अपने दूतों को अपने उपासकों में से चुना ताकि वे अपनी व्यवस्था को मानवता तक पहुंचा सकें। ईश्वर कहते हैं:

"...ईश्वर ही अधिक जानता है कि अपना संदेश पहुँचाने का काम किसिसे ले ..." (क़ुरआन 6:124)

ईश्वर दूसरी जगह भी कहते हैं:

"...क्या रसूलों (दूतों) पर स्पष्ट संदेश देने के अलावा और कुछ करने का आरोप है?" (क़ुरआन 16:35)

रसूल (दूत) अपने सभी कार्यों में त्रुटि (ग़लती) से सुरक्षित है। ईश्वर ने दूत की जीभ को सत्य के अलावा कुछ भी बोलने से बचाया है। ईश्वर ने दूत के अंगों को सही करने अलावा कुछ भी करने से बचाया है।

ईश्वर ने उसे इस्लामी कानून के विपरीत किसी भी चीज़ के लिए अनुमोदन दिखाने से बचाया है। वह ईश्वर की कृतियों में सबसे सुंदर रूप है। यह स्पष्ट है कि ईश्वर क़ुरआन में उनका वर्णन कैसे करते हैं:

"गवाह है तारा, जब वह नीचे को आए। तुम्हारी साथी (मुहम्मह) न गुमराह हुआ और न बहका; और न वह अपनी इच्छा से बोलता है; वह तो बस एक प्रकाशना है, जो की जा रही है" (क़ुरआन 53:1-4)

हम हदीस में देखते हैं कि कोई भी परिस्थिति हो, चाहे कितनी भी कोशिश कर ले, लेकिन पैगंबर को सच बोलने से नहीं रोक सकती। क्रोधित होने से उनकी वाणी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मज़ाक करते हुए भी उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला। उनके अपने हितों ने उन्हें सच बोलने से कभी नहीं रोका। एकमात्र लक्ष्य जो उन्होंने खोजा था वह था सर्वशक्तिमान ईश्वर की प्रसन्नता।

अब्दुल्ला बी. अमर बी. अल-आस ने कहा कि वह सब कुछ लिखा करते थे, जो ईश्वर के रसूल ने कहा था। तब कुरैश के गोत्र ने उसे ऐसा करने से मना किया, और कहा: "क्या तुम वह सब कुछ लिखते हो जो ईश्वर का दूत कहता है, और वह केवल एक आदमी है जो संतोष और क्रोध में बोलता है?"

अब्दुल्ला बी. अम्र ने लिखना बंद कर दिया और ईश्वर के रसूल (दूत) से इसका उल्लेख किया जिन्होंने उसे बताया:

"लिख, उन्हीं की कसम जिनके हाथ में मेरी आत्मा है, इस से केवल सत्य ही निकलता है।" ... और उसके मुंह की ओर इशारा किया।

क़ुरआन, सुन्नत और न्यायविदों की सहमति सभी इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि ईश्वर के दूत का पालन करना अनिवार्य है। क़ुरआन में ईश्वर कहते हैं:

"ऐ ईमान वालो, ईश्वर की इबादत करो और उसके रसूल की और जो तुम में हुक्मरान हैं उनकी इताअत करो। यदि आप किसी मामले के बारे में विवाद में पड़ जाते हैं, तो उसे आप ईश्वर और उसके दूत पर छोड़ दें, यदि आप ईश्वर और आख़िरत पर विश्वास करते हैं ..." (क़ुरआन 4:59)

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/index.php/hi/articles/655

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।